P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-9*(Part-1) December 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

मेवाड़ शैली के चित्रों में अंकित नारी–आभूषण : एक अध्ययन

अर्चना सक्सेना
असिस्टेंट प्रोफेसर,
चित्रकला विभाग,
कन्या महाविद्यालय,
आर्य समाज, भूड़, बरेली

सारांश

सम्पूर्ण जगत् सौन्दर्य की आदर्शतम् व्याख्या है। सृष्टि के कण–कण में सौन्दर्य व्याप्त है। किसी भी सभ्यता एवं संस्कृति के विकास में सौन्दर्य का योगदान भी निश्चित रूप से अति विशिष्ट है। समाज की उत्कृष्ट रचनात्मक प्रवृत्ति को सौन्दर्य के अधीन ज्ञात किया जा सकता है। मानव ने सौन्दर्य के वशीभूत भौतिक–जगत में अनेक ऐसी वस्तुओं का निर्माण किया, जिससे उसके जीवन का विस्तृत–पक्ष सौन्दर्य के आधीन व्यतीत हो सके, अतः सौन्दर्य आहलाद से परिपूर्ण मानवीय–जीवन की सुन्दरतम भावनाओं का दर्पण है।

मुख्य शब्द : मेवाड़ शैली, नारी आरक्षण, सौन्दर्य, भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति।

प्रस्तावना

मानव स्वयं को सदा ही अलंकृत करने हेतु प्रयासरत रहा है। भौतिक जगत में उपलब्ध विविध संसाधनों के माध्यम से उसने अनेक सजावटी वस्तुओं की रचना की। सौन्दर्य वृद्धि के इन्हीं साधनों में आभूषणों का योगदान भी अद्वितीय है। आभूषण मानव की बाह्य आवश्यकता एवं तकनीकि दक्षता से ही सम्बन्धित नहीं है, अपितु उसके मनोभावों का भी प्रतिकात्मक रूप में वर्णन है। भारतीय आभूषणों का आध्यात्म देवत्व कल्याण एवं शुभाशुभ आदि भावनाओं के साथ जिस घनिष्ठता से सम्बद्ध है, वह विश्व में अद्वितीय है। प्राचीन युग में आभूषण परक मान्यताएँ आभूषणों को वैशिष्ट्यता प्रदान करती है। लगभग पाँच हजार वर्ष पूर्व के आभूषण अपने आकार निर्माणशैली तथा चित्राकर्षक आभा के साथ आधुनिक भारत में प्रचलित आभूषणों से स्पर्धा करते प्रतीत होते हैं। वस्तुतः प्राचीन भारत से ही आभूषण भारतीयों के प्रकृति प्रेम, प्राकृतिक उपादानों की दिव्य अवधारणा एवं गहन धार्मिक विश्वासों के प्रतीक हैं।

आदिकालीन मानव की जीवनशैली का यदि आभूषणों के अन्तर्गत अध्ययन किया जाए, तो हमें ज्ञात होगा कि उसने वस्त्रों के समान आभूषणों को भी समान महत्त्व दिया। इतिहास साक्षी है, कि हड़प्पा, मोहनजोदाड़ो, कालीबंगा, लोथल तथा सिन्धु घाटी की अन्य सभ्यताओं के अन्तर्गत तत्सामयिक मानव की जीवनशैली को यदि आभूषण से सन्दर्भित करते हुए अध्ययन किया जाए तो ज्ञात होगा कि वस्त्रों के सदृश आभूषणों ने उनके जीवन को सौन्दर्य से ओत–प्रोत कर दिया। यह मानव की सौन्दर्य के प्रति ललक ही थी, जिसने उसको कुछ न कुछ सृजित करने हेतु प्रेरित किया और इसी के फलस्वरूप कभी उसने जानवरों के दाँतों, मृत पशुओं की हड्डियों और मिट्टी से निर्मित आभूषणों को धारण किया तो कभी सीप–मोतियों से लेकर सूखी घास, हाथी दांत एवं अन्य अनेक प्रकार की प्राकृतिक चीजों को आभूषणों के रूप में गढ़कर उनका प्रयोग अपने साज–श्रृंगार में किया। ये आभूषण भूगर्भ–वेत्ताओं को उत्खनन में प्राप्त हुए हैं।[1] विभिन्न धातुओं की खोज यथा स्वर्ण, रजत, पीतल, तांबा एवं लौह समान धातुएँ अस्तित्व में आयी, जिससे ललाटिका, ग्रैवेयक कण्ठी, अंगुलियक, कटिसूत्र एवं भुजबन्द या बाजूबन्द जैसे आभूषण इन्हीं धातुओं के माध्यम से बनाए जाने लगे। ये आभूषण गढ़न एवं उत्कीर्णन दोंनो ही विधाओं में अतुलनीय हैं।[2]

आभूषण व्यक्ति की सौन्दर्य वृद्धि में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अनादिकाल से ही मनुष्य आभूषणों के द्वारा स्वयं की सजावट करता आया है। वस्त्रों के सदृश आभूषणों को भी मानव ने अति महत्त्व दिया है। स्त्री एवं पुरूष दोंनो सदैव ही आभूषणों के प्रति लालायित रहे हैं। इसके अतिरिक्त भारतीय जीवनशैली के अनुरूप आभूषण उनकी सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति के द्योतक भी मान लिए गए हैं।

आदिकालीन मानव की जीवनशैली का यदि आभूषणों के अन्तर्गत अध्ययन किया जाए, तो हमें ज्ञात होगा, कि वस्त्रों के समान ही आभूषणों को

भी महत्त्व प्रदान किया गया है। वस्त्र तो उसकी आवश्यकताओं के आधीन थे, जबकि आभूषणों ने उसके जीवन को सौन्दर्य से भर दिया। यह मानव की सौन्दर्य के प्रति ललक ही थी, जिसने उसको कुछ न कुछ सृजित करने हेतु प्रेरित किया और जिनमें विभिन्न प्रकार के आभूषणों का मुख्य स्थान था।

इन आभूषणों को उसने अपने शरीर के विभिन्न अंगों पर सजाकर स्वयं को महत्त्व एवं आकर्षण प्रदान किया। सभ्यता के विकास ने मानव के भौतिकवादी पक्ष को सबलता प्रदान की, जिसका प्रभाव उसके द्वारा धारण किए गए आभूषणों में भी प्रतिबिम्बित हुआ। विभिन्न धातुओं की खोज ने भी इन आभूषणों को अनेक रूप प्रदान किए। स्वर्ण, रजत, पीतल, तांबा, लौह जैसी अनेक धातुओं के द्वारा अब आभूषण निर्मित किए जाने लगे।

प्रत्येक युग में आभूषणों की निर्मित करने में स्वर्ण एवं रजत धातुओं को महत्त्वपूर्ण एवं प्रथम स्थान प्राप्त रहा है। साथ ही ये धातुएँ व्यक्ति की पद–प्रतिष्ठा का पर्याय रही है। जहाँ समाज के उच्चवर्गीय वैभव–सम्पन्न व्यक्तियों में स्वर्ण एवं रजत धातुओं से बने आभूषण विशेष प्रिय रहे, वहीं निम्नवर्ग ने अपनी सौन्दर्य–जिज्ञासा को शान्त करने हेतु तांबा, पीतल एवं लौह जैसी साधारण धातुओं से निर्मित आभूषणों का आश्रय लिया। भारतीय कला में भी इन आभूषणों के विविध स्वरूप दर्शनीय है। भारतीय कवियों ने भी आभूषणों का वर्णन करके इनके महत्त्व को ओर अधिक बढ़ा दिया है। अष्टछाप–काव्य में भी आभूषणों का उल्लेख बहुत हुआ है, जो इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि तत्संबंधी लौकिक वैभव के जिस आदर्शतम् स्वरूप की कल्पना मानव समाज कर सकता था, वह इन सभी अष्टछापी कवियों ने अपने परम आराध्य एवं प्रियाओं हेतु सहज ही सुलभ कर दिया है।[3]

भारतीय चित्रकला में राजस्थानी चित्रशैली की उपशैली मेवाड़–चित्रकला के विकास में यहाँ के चितेरों ने तूलिका द्वारा आभूषणों का विविधतापूर्ण अंकन आकृतियों की सजावट हेतु किया है, जिसके फलस्वरूप चित्रों में अंकित स्त्री–पुरूष दोंनो की ही शारीरिक छवियों को सुसज्जित कर चित्र के सौन्दर्य में वृद्धि की गई है।

आदिकाल से ही पुरूषों की तुलना में स्त्रियों की आसक्ति गहनों के प्रति कहीं अधिक रही है। प्राचीन काल से कई कबीलों की यह मान्यता रही है कि स्त्री–पुरूषों के तन, मन एवं इन्द्रियों को आभूषणों के माध्यम से वश में किया जा सकता है, लेकिन समय के साथ गहने कमोवेश मात्र स्त्रियों के व्यक्तित्व के साथ ही जुड़ गए।[4] नारी की साज–सज्जा में आभूषण एक महत्त्वपूर्ण उपकरण है, इसी कारण से चित्रकार की तूलिका ने नारी के सम्पूर्ण शरीर को विभिन्न आभूषणों से सजाकर उसमें सम्पूर्णता का बोध कराया है।

चित्रों में अंकित नारी आभूषणों में टीका, कर्णफूल, चूड़ा–चूड़ियॉ, नथ, कण्ठी, हार, भुजबन्द, कमरबन्द, पायजेब, मुद्रिका, अंगूठे का छल्ला–दर्पण, आरसी[5] एवं बिछुआ के अंकन ने नारी के सौन्दर्य के नवीन आयामों को दर्शाया है। नारी सौन्दर्य में मुख का योगदान सर्वत्र स्वीकारा गया है। चेहरे के विविध अंग, यथा–नासिका, नेत्र, होठ, गाल एवं कर्ण आदि चित्र में सौन्दर्य वृद्धि करने में महती भूमिका निभाते हैं।[6] अतः मेवाड़ी चित्रकला में भी नारी आकारों में विविध आभूषणों के अंकन के द्वारा सौन्दर्य को निखारा गया है।

मेवाड़ चित्रों में स्त्रियों के ललाट पर लटकता टीका, नाक में पहनी मोतियों की नथ एवं गले में विविध रत्न–जड़ित हार व मालाएँ आदि सहज ही प्रेक्षक को आकृष्ट कर लेने में सक्षम है। हाथों में बाजूबंद तथा इनमें लटकते काले फुंदने विशेष रूप से मेवाड़ की स्थानीय परम्परा के द्योतक हैं। कानों में विविध प्रकार के आभूषणों को तथा कटि–प्रदेश में अवधारित विभिन्न आभूषणों को चित्रित कर कलाकार ने नारी–आकारों के रूप सौन्दर्य की छटा बिखेरी है।

अतः मेवाड़ शैली में नारी का सम्पूर्ण शरीर विभिन्न आभूषणों द्वारा सुसज्जित कर चित्रकार ने रूप लावण्य की एक नवीन परिभाषा चित्रित की है। शीश पर बालों की सन्धि पर ललाट पर लटकता हुआ बेर की आकृति का सोने अथवा चांदी का आभूषण जो 'बोर' या 'बोरला' कहलाता है। बोरला के सृदश ही एक अन्य आभूषण जिसमें बहुमूल्य पत्थरों अथवा कांच के रंग–बिरंगे नगों को जड़ा जाता है, राख्ड़ी के नाम से जाना जाता है।[7] कानों के आभूषणों के अनेक रचनात्मक स्वरूप मेवाड़ चित्रशैली में उपलब्ध हैं। चित्रों में अंकित नारियाँ अधिकांशतया वृत्ताकार फूल सदृश कर्णफूल पहने हैं, जोकि सोने, मोती एवं विविध रंगों की मीनाकारी के प्रभाव से युक्त बनाए गए हैं। कर्णफूल का बाह्य भाग सफेद मोतियों के प्रभाव से युक्त है, जोकि स्थानीय परम्परा का द्योतक है।

नारी आकारों में नाक में पहना जाने वाला आभूषण सर्वत्र दर्शनीय है। यह आभूषण नथ, बेसर एवं बेसरी आदि शब्दों से जाना जाता है। चित्रों में नासिका पर लटकती नथ तथा स्वर्ण निर्मित चन्द्राकार नथ अंकित मिलती है, जिनके ऊपरी सिरे पर मोती जड़ित अंकन है।

नारी सौन्दर्य को सहजता से दर्शाने हेतु तथा सौन्दर्य की श्रेष्ठतम अभिव्यक्ति हेतु कण्ठ का आभूषण भी अति विशिष्ट है। भारतीय चित्रण–विधान में इस आभूषण के अनेक रूप प्राचीनकाल से दर्शनीय हैं, ये आभूषण मोतियों की मालाओं, हंसुली, हार एवं चन्द्रहार आदि रूपों में नारी व रूपांकृतियों की सज्जा में प्रयुक्त किए गए हैं।[8] मेवाड़ के चित्रों में प्रारम्भिक काल से लेकर परवर्ती चित्रों तक इस आभूषण के अनेक स्वरूप चित्रों में अंकित हैं। इस आभूषण के अंकन में चित्रकार ने जितनी अधिक विविधता दर्शायी है, वह निःसंदेह विस्मयकारी है। नारी आकारों में कण्ठ में अनेक छोटी–बड़ी मोतियों की मालाएँ तथा अनेक प्रकार की डिजाइनों के स्वर्णहार आदि अति उत्कृष्ट मीनाकारी के विशिष्ट उदाहरण हैं।

इसके अतिरिक्त काले मोतियों से निर्मित माला अथवा हार का अंकन भी चित्रों में नारी–आकारों की सज्जा में प्राप्त होता है। भारतीय परम्परानुसार इस आभूषण को ''मंगलसूत्र'' कहा गया है, जिससे स्त्री के विवाहित होने का ज्ञान होता है। इसी कारण मेवाड़ी–चित्रकारों ने अधिकांशतया अन्य ग्रीवा–आभूषणों के

साथ काले मोतियों अथवा पट्टे से बने मंगलसूत्र का अंकन भी किया है।

मेवाड़ी नारी रूपाकारों की कोमल बॉहों को अनेक अलंकारों से सुसज्जित किया गया है। ये अलंकार आभूषणों के रूप में बाजू से लेकर हाथों की उंगलियों तक विविध रूपों में चित्रों में उपलब्ध हैं। हाथों के आभूषण में काले फुंदने जिनमें नीचे की ओर सफेद मोती लटके रहते हैं, भी मेवाड़ की परम्परागत् लोक–चित्रकला के प्रभाव का प्रतिनिधित्व करते हैं, इसके अतिरिक्त हाथों की उंगलियों में पहने गए आभूषण जिन्हें मुद्रिका, छल्लों की अंगूठी अथवा मूंदड़ी कहते हैं, विविध रूपों में दृष्टिगत् होते हैं।

स्त्रियां चित्रों में हथफूल अथवा हथपान पहने हुए भी चित्रित की गई हैं। ये हथफूल विभिन्न रूपों में चित्रकार की तूलिका के द्वारा निर्मित किए गए हैं। हथेली में पहना गया ये आभूषण स्वर्ण तथा रंग–बिरंगें नगों एवं मोतियों के साथ चित्रित हुआ है। यह मोतियों की लड़ियों के साथ अंगूठियों की सांकलिया के आधार पर जुड़ा रहता है तथा नीचे की ओर कलाई में पहने गए कंगनों में फंसा हुआ अंकित किया गया है।

इन्हीं आभूषणों की श्रृंखला में कटि–प्रदेश में पहना जाने वाला आभूषण करधनी [9] लंहगे के ऊपरी भाग पर बंधा हुआ चित्रित है, जो विभिन्न कलात्मक रूपों में चित्रकार की सृजनात्मक प्रतिभा का परिणाम है। इस आभूषण का एक और नाम तगड़ी भी लोक में प्रचलित है। उपरोक्त वर्णित आभूषणों के साथ नारी–आकारों में अंकित पैरों के आभूषण बिछुआ, नुपुर, पायल एवं झांझड़ इत्यादि शब्दों के रूप में प्रचलित हैं। चित्रों में नारी आकारों के पैरों में इस आभूषण को कलात्मक स्वरूप प्रदान करके मेवाड़ की चित्रण शैली को महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान किया गया है। स्वर्ण की मोटी–मोटी अलंकरणात्मक पायलें चित्रों में अंकित हैं। इन पायलों पर सफेद मोतियों की लड़ी भी नारी–सुलभ–सौन्दर्य की वृद्धि करती है। चित्रों में नारी–आकारों के पैंरों में इस आभूषण को कलात्मक–स्वरूप प्रदान करके मेवाड़ की चित्रशैली को महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान किया गया है।

इस प्रकार नारी के अंगों–प्रत्यंगों में सज्जित उपर्युक्त आभूषणों का प्रयोग चित्रकार ने अति कुशलतापूर्वक तत्कालीन सभ्यता एवं संस्कृति को दर्शाने हेतु किया है। कलाकार ने आभूषणों से न सिर्फ चित्र के सौन्दर्य में वृद्धि की है, अपितु तत्कालीन सामाजिक वर्ग–भेद की व्याख्या भी इन आभूषणों के अंकन द्वारा कुशलतापूर्वक की है।

चित्रों में नारी अलंकरण हेतु ये उपादान अनिवार्य तो हैं ही, साथ ही चित्रकारों ने भाव–अभिव्यक्ति हेतु भी मुख्य माध्यम के रूप में इनका प्रयोग किया है। श्रंगार रस की विविध अवस्थाओं को दर्शाने हेतु चित्रकार ने नारी अंगों में प्रयुक्त आभूषणों के द्वारा नारी की प्रेम अवस्थाओं को भी चित्रतल पर अंकित किया है।

उद्देश्य

मेवाड़ शैली के चित्रों में अंकित नारी–आभूषणों के माध्यम से जहॉ एक और मेवाड़ी समाज की सामाजिक वर्ग–व्यवस्था का ज्ञान होता है, वहीं दूसरी ओर इस उपादान के माध्यम से कलाकार की सौन्दर्य के प्रति ललक को दर्शाया गया है। चित्रों में नारी आकारों को आभूषणमय अंकित करने से न केवल उनकी सामाजिक स्थिति का पता चलता है, अपितु चित्र का कलात्मक एवं भावपक्ष भी सुदृढ़ हो जाता है, अतः चित्र के सौन्दर्यगत् पक्ष को प्रबल करने के उद्देश्य से इन आभूषणों को विविध कलात्मक रूपों में अंकित किया गया है।

निष्कर्ष

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचना से यह स्पष्ट हो जाता है कि ये विविधतापूर्ण आभूषण निश्चित रूप से तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक–दर्पण को प्रतिबिम्बित करने में अपना योगदान प्रदान करते रहे हैं। वस्तुतः मानवीय जीवन में क्षण–प्रतिक्षण इन उपादानों की महती आवश्यकता के कारण ही चित्रकार की तूलिका इनसे विमुख न रह सकी, अतः उसने परिवेश अनुभवों एवं जीवनशैली के अनुरूप चित्रतल पर साधारण अथवा कलात्मक रूप में नारी आकृतियों के अंग–प्रत्यंगों पर इन आभूषणों को संयोजित कर दिया, जिससे सम्पूर्ण चित्र का वातावरण झिलमिलाते प्रकाश की तरह चमक उठा और नारी आकृतियों को अद्भुत वातावरण के साथ प्रस्तुत किया।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *राय, गोविन्द चन्द्र, वैदिक युग के आभूषण, पृष्ठ सं0–3*
2. *जोशी, शेखर चन्द्र, चित्रकला एवं लोककला, पृष्ठ सं0–22*
3. *मध्ययुगीन कृष्ण भक्ति परम्परा, पृष्ठ सं0–167*
4. *वनिता, अक्टूबर 1999, अंक 22, पृष्ठ सं0–8*
5. *हेण्डले, थॉमस हॉलवेन, इण्डियन ज्वैलरी, पृष्ठ सं0–4*
6. *मनोरमा, नथ एवं नासिका सौन्दर्य (लेख), जून द्वितीय, 1992, पृष्ठ सं0–83*
7. *डॉ0 मोहन, ब्रज, राजस्थानी औद्योगिक शब्दावली, पृष्ठ सं0–578*
8. *घोष, ए0, अजन्ता मयूररस, प्लेट 10, 11, 40, 54*
9. *'तनक कटि पर कनक करधनी', छीन–छवि चमकति, सूरसागर, 10/184*